नाम रामायणम्

॥ बालकाण्डः ॥
शुद्धब्रह्म परात्पर राम्॥१॥
कालात्मक परमेश्वर राम्॥२॥
शेषतल्प सुख निद्रित राम्॥३॥
ब्रह्माद्यामर प्रार्थित राम्॥४॥

चण्ड किरण कुल मण्डन राम्॥५॥
श्रीमद्दशरथ नन्दन राम्॥६॥
कौसल्या सुख वर्धन राम्॥७॥
विश्वामित्र प्रियधन राम्॥८॥

घोर ताटका घातक राम्॥९॥
मारी चादिनि पातक राम्॥१०॥
कौशिक मखसंरक्षक राम्॥११॥
श्रीमदहल्योद्धारक राम्॥१२॥

गौतम मुनि सम्पूजित राम्॥१३॥
सुर मुनि वरगण संस्तुत राम्॥१४॥
नाविक धावित मृदुपद राम्॥१५॥
मिथिलापुर जन मोहक राम्॥१६॥

विदेह मानस रञ्जक राम्॥१७॥
त्र्यम्बक कार्मुक भञ्जक राम्॥१८॥

सीतार्पित वरमालिक राम्॥१९॥
कृतवैवाहिक कौतुक राम्॥२०॥

भार्गव दर्प विनाशक राम्॥२१॥
श्रीमदयोध्या पालक राम्॥२२॥
॥ अयोध्याकाण्डः ॥
अगणित गुणगण भूषित राम्॥२३॥
अवनी तनया कामित राम्॥२४॥

राका चन्द्रस मानन राम्॥२५॥
पितृवाक्या श्रित कानन राम्॥२६॥
प्रियगुह विनि वेदित पद राम्॥२७॥
तत्क्षालित निज मृदुपद राम्॥२८॥

भरद्वाज मुखा नन्दक राम्॥२९॥
चित्र कूटाद्रि निकेतन राम्॥३०॥
दशरथ सन्तत चिन्तित राम्॥३१॥
कैकेयी तनयार्थित राम्॥३२॥

विरचित निज पितृ कर्मक राम्॥३३॥
भरतार्पित निज पादुक राम्॥३४॥
॥ अरण्यकाण्डः ॥
दण्डका वनजन पावन राम्॥३५॥
दुष्टविराध विनाशन राम्॥३६॥

शरभङ्ग सुती क्ष्णार्चित राम्॥३७॥

अगस्त्यानुग्रह वर्धित राम्॥३८॥
गृध्राधिप संसेवित राम्॥३९॥
पञ्चवटी तट सुस्थित राम्॥४०॥

शूर्पणखार्ति विधायक राम्॥४१॥
खर दूषण मुख सूदक राम्॥४२॥
सीताप्रिय हरिणानुग राम्॥४३॥
मारीचार्तिकृदा शुग राम्॥४४॥

विनष्ट सीतान्वेषक राम्॥४५॥
गृध्राधिप गति दायक राम्॥४६॥
शबरी दत्त फलाशन राम्॥४७॥
कबन्ध बाहुच्छे दक राम्॥४८॥

॥ किष्किन्धाकाण्डः ॥
हनुमत्सेवित निजपद राम्॥४९॥
नत सुग्रीवा भीष्टद राम्॥५०॥
गर्वित वालि संहारक राम्॥५१॥
वानर दूत प्रेषक राम्॥५२॥

हितकर लक्ष्मण संयुत राम्॥५३॥
॥ सुन्दरकाण्डः ॥
कपि वर सन्तत संस्मृत राम्॥५४॥
तद्गति विघ्न ध्वंसक राम्॥५५॥
सीता प्राणा धारक राम्॥५६॥

दुष्ट दशानन दूषित राम्॥५७॥
शिष्ट हनूमद्भूषित राम्॥५८॥
सीता वेदित काकावन राम्॥५९॥
कृत चूडामणि दर्शन राम्॥६०॥

कपिवर वचनाश्वासित राम्॥६१॥
॥ युद्धकाण्डः ॥
रावण निधन प्रस्थित राम्॥६२॥
वानर सैन्य समावृत राम्॥६३॥
शोषित सरिदी शार्थित राम्॥६४॥

विभीषणाभय दायक राम्॥६५॥
पर्वत सेतु निबन्धक राम्॥६६॥
कुम्भकर्ण शिरच्छेदक राम्॥६७॥
राक्षस सङ्घ॑वि मर्दक राम्॥६८॥

अहि महि रावण चारण राम्॥६९॥
संहृत दशमुख रावण राम्॥७०॥
विधिभव मुखसुर संस्तुत राम्॥७१॥
खस्थित दशरथ वीक्षित राम्॥७२॥

सीता दर्शन मोदित राम्॥७३॥
अभिषिक्त विभीषण नत राम्॥७४॥
पुष्पक याना रोहण राम्॥७५॥
भरद्वाजादि निषेवण राम्॥७६॥

भरतप्राण प्रियकर राम्॥७७॥
साकेतपुरी भूषण राम्॥७८॥
सकल स्वीय समानत राम्॥७९॥
रत्नलस त्पीठास्थित राम्॥८०॥

पट्टाभिषेका लङ्कृत राम्॥८१॥
पार्थिवकुल सम्मानित राम्॥८२॥
विभीष णार्पित रङ्गक राम्॥८३॥
कीश कुलानुग्रह कर राम्॥८४॥

सकल जीव संरक्षक राम्॥८५॥
समस्त लोका धारक राम्॥८६॥
॥ उत्तरकाण्डः ॥
आगत मुनिगण संस्तुत राम्॥८७॥
विश्रुत दश कण्ठोद्भव राम्॥८८॥

सीतालिङ्गन निर्वृत राम्॥८९॥
नीति सुरक्षित जनपद राम्॥९०॥
विपिन त्याजित जनकज राम्॥९१॥
कारित लवणा सुरवध राम्॥९२॥

स्वर्गत शम्बुक संस्तुत राम्॥९३॥
स्वतनय कुशलव नन्दित राम्॥९४॥
अश्वमेध क्रतु दीक्षित राम्॥९५॥
काला वेदित सुरपद राम्॥९६॥

आयोध्यक जन मुक्तिद राम्॥९७॥
विधिमुख विबुधा नन्दक राम्॥९८॥
तेजोमय निज रूपक राम्॥९९॥
संसृति बन्ध विमोचक राम्॥१००॥

धर्म स्थापन तत्पर राम्॥१०१॥
भक्ति परायण मुक्तिद राम्॥१०२॥
सर्व चराचर पालक राम्॥१०३॥
सर्व भवामय वारक राम्॥१०४॥

वैकुण्ठालय संस्थित राम्॥१०५॥
नित्या नन्द पदस्थित राम्॥१०६॥
राम् राम् जय राजा राम्॥१०७॥
राम् राम् जय सीता राम्॥१०८॥

॥ इति नामरामायणम् सम्पूर्णम् ॥